मैं मम्मा से वचनबद्ध हुई

● ब्रह्माकुमारी संतोष बहन, मुम्बई (सायन)

हम दुनिया में बहुतों के सम्पर्क में आते हैं लेकिन उनमें से खास किसी की भी अविस्मरणीय स्मृति नहीं रहती। विरले किसी की स्मृति कभी-कभी ऐसा ठप्पा लगा कर जाती है कि परछाई की तरह साथ रहने लगती है। ऐसी पवित्र आत्मा को भूलना चाहो तो भी असम्भव हो जाता है। मेरे जीवन में भी ऐसी एक आत्मा आयी और मेरा सारा जीवन परिवर्तित हो गया। आप ऐसी पुण्य आत्मा के बारें में अवश्य जानना चाहेंगे। अभी लिखते समय भी मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि वह पवित्र आत्मा अपने मोहक हर्षित मुखड़े से, स्नेह भरी सुखकारी दृष्टि से मेरी ओर देख रही हैं। वे ईश्वरीय परिवार की अलौकिक देवी माँ थी। उनके लंबे काले बाल, चेहरे को और ज्यादा सुशोभित कर रहे थे। उनके मधुर शब्द आज भी कानों में गूँज रहे हैं। उनके सवाल-जवाब के तरीके शास्त्रों में वर्णित सरस्वती देवी की याद दिलाते। वे ज्ञान-सितार इतनी कुशलता से बजाती और गीत भी इतनी मधुर वाणी से गाती कि सुनने वाले देहभान को भूल जाते थे। मैं आपको ज्यादा सोच में नहीं डालना चाहती हूँ। लगभग 49 वर्ष पहले (1965) का वृत्तांत आपके समक्ष रख रही हूँ –

मम्मा से मिलने में आनाकानी

मेरी बड़ी बहन मुम्बई में रहती थी और प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाती थी। मैं छुट्टियों में हमेशा उनके घर जाया करती थी। सन् 1965 में मैंने एस.एस.सी. पास की और आर्ट्स् कॉलेज में प्रवेश लेने के लिए मुम्बई आयी। मैं बहुत खुश थी कि कॉलेज जीवन का आनंद, जो कि मुझे बहुत आकर्षित करता था, लूटने को मिलेगा। कॉलेज में प्रवेश मिलना मेरे लिए एक शुभ घटना थी। प्रवेश लेने के बाद मैं वापस अपने घर जाने की तैयारी कर रही थी। उसी समय मेरी बहन ने कहा, मम्मा (जगत्माता) मुम्बई में आयी हैं और फिर मुझसे आग्रह किया कि उनसे मिलने के लिए चलना ज़रूरी है। मैंने साफ इन्कार करते हुए कहा, मुझे आध्यात्मिक बातों में कोई रस नहीं आता। किसी माता का दर्शन मैं नहीं करना चाहती हूँ, मुझे तो घर जाने की तैयारी करनी है। मेरे इस झूठे सबब (कारण) को जानकर बहन ने मुझसे कहा कि मैं बाद में तुम्हें तैयारी करने में मदद करूँगी। बहन का दिल रखने लिए, दूसरे दिन मैं उनके साथ मम्मा से मिलने गई। मैंने देखा कि बहुत-से

भाई-बहनें मम्मा के इन्तजार में थे। मैं भी वहाँ जाकर बैठ गयी। कुछ समय बीत गया। मैं वापस लौटना चाहती थी क्योंकि मैं किसी भी व्यक्ति का, चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो, मिलने के लिये इतना समय इन्तज़ार नहीं कर सकती थी। इतने में किसी बहन ने मुझे मम्मा के कमरे में बुला लिया।

पहला ठप्पा

मम्मा के प्रभावशाली व्यक्तित्व के बारे में मैं पहले ही बता चुकी हूँ। एक छोटी गुड्डी की तरह मैं उनकी ओर देखती रही। मम्मा ने मुझे अपने पास बुलाया और मधुर वाणी से पूछा, बेटी, तेरा नाम क्या है? उनके ये बोल मुझे अमृत जैसे लगे। मैंने कहा, संतोष। तुरन्त मम्मा ने पूछा, क्या तुम सन्तुष्ट हो? मुझे इस बात का पता ही नहीं था कि सन्तुष्ट रहना बहुत जरूरी है। मैं सोच ही रही थी, इतने में मम्मा ने मुझसे मधुर वाणी में कहा, क्या तुम अपने

आपसे सभी बातों में सन्तुष्ट हो? मैंने झट जवाब दिया, नहीं मम्मा, मेरी प्यारी मम्मा, नहीं। मैं असन्तुष्ट हूँ, असमाधानी हूँ। मैंने इतने प्यार से, स्नेह से ''मम्मा'' कहा जैसे कि मैं अपनी ''माँ'' को कहती थी। भले ही मैं अपनी माँ की बहुत प्यारी बच्ची थी लेकिन लौकिक माँ से मम्मा जैसी स्नेहभरी दृष्टि और बच्ची जैसा प्यार अनुभव नहीं किया था। मेरा हाथ अपने हाथ में लेते हुए मम्मा ने पूछा, बेटी सन्तोष, तुझे पता है, सन्तोष देने वाला कौन है? यह मालूम होना चाहिए। मम्मा ने आगे बहुत कुछ कहा लेकिन मैं तो साकारी, विकारी दुनिया को भूल गयी थी, अपनी देह की सुधबुध भी भूल गयी थी और अनुपम सुख की लहरों में लहरा रही थी। मेरी बहन ने मुझे सजग किया। मैं खड़ी हो गयी।

मम्मा ने पुन: मेरा हाथ पकड़ लिया। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं बिना सोचे-समझे क्यों अपना हाथ मम्मा को दे रही हूँ। जब मैं अपना हाथ छुड़ा रही थी, तो मम्मा बोली, मेरे हाथ में दिया हुआ हाथ कभी नहीं छोड़ना। बिजली की गति से मैं देहभान में आयी। मैं मम्मा से वचनबद्ध हुई थी यह बात बहुत देरी से मुझे समझ में आयी लेकिन मैं कुछ नहीं बोली। इस अविस्मरणीय मुलाकात से परोपकारी मम्मा के प्रति मन में आदरभाव जागृत हुआ। आज

भी मैं उस अतीन्द्रिय सुख का अनुभव भूल नहीं सकती हूँ।

आध्यात्मिक सेवा का पवित्र करार

दूसरे दिन मुम्बई के उस क्षेत्र में बहुत जोरदार वर्षा हुई। अभी मेरी बारी थी मम्मा से मिलने चलने का आग्रह करने की। मैंने बहन को घाटकोपर ले चलने के लिए आग्रह किया। वे चलने के लिए तैयार नहीं थी लेकिन मैंने उन्हें ले चलने के लिए मजबूर कर दिया। बहन ने कहा, भारी वर्षा के कारण सभी रास्तों पर पानी भर गया है, बस सर्विस और टैक्सी भी बंद हो गयी हैं इसलिए घाटकोपर जैसे दूर स्थान पर पहुँचना असम्भव है। बहन जानती थी कि मैं इतना आग्रह क्यों कर रही हूँ इसलिए अंत में उन्होंने ''हाँ'' कहा। हम दोनों रेल से घाटकोपर पहुँच गये। वहाँ भी जोरदार वर्षा थी। हम छाते के सहारे सेवाकेन्द्र पर पहुँचे। सेवाकेन्द्र स्टेशन से काफी दूर था और भारी वर्षा के कारण हम दोनों पूरे-पूरे भीग गये थे। मैं जब वहाँ पहुँची तब मम्मा अन्य बहनों के साथ फोटो निकलवाने के लिए खड़ी थी। मुझे देखते ही मम्मा ने बहुत प्यार से अपने पास बुलाया। मैंने सहर्ष आज्ञा पालन की। मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर मम्मा ने फोटो खिंचवाया। उसी समय मैं आध्यात्मिक सेवा के पवित्र बंधन में बँध गई। मम्मा ने मधुर वाणी से कहा, ''देख संतोष, अगर तू अपना हाथ मेरे हाथ से छुड़वायेगी या दिये हुए वचन पर नहीं चलेगी तो धर्मराज तुझे भारी सज़ा देगा।'' ये बोल आज भी मेरे कानों में गूँज रहे हैं।

मम्मा से मिलकर मुझे जो आनन्द प्राप्त हुआ वह आनन्द आज भी उमंग-उत्साह दे रहा है। यह अविस्मरणीय दिव्य स्मृति क्या मैं भूल सकूँगी? नहीं। कभी नहीं!! ❖